www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

**Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal**

**(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)**

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

# भारत में दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का एक अध्ययन

**मो0 अफरोज आलम**

*शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा*

**प्रो० (डॉ०) पवन कुमार**

*शोध पर्यवेक्षक, प्राचार्य, पी० एस० कॉलेज, मधेपुरा, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा*

**सारांश–**

इस शोध आलेख का शीर्षक "भारत में दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का एक अध्ययन" है। यह लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के बुनियादी सवालों को छूता है। ऐसे देश में जहाँ लोकतांत्रिक सिद्धांत संविधान में निहित हैं। भारत में दलित महिलाओं का राजनीतिक विकास सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संघर्षों के बीच विकसित हुआ है। भारतीय समाज की जाति–आधारित संरचना और पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने ऐतिहासिक रूप से दलित महिलाओं को दोहरे शोषण का शिकार बनाया। उन्हें न केवल महिला होने के कारण भेदभाव सहना पड़ा, बल्कि दलित होने के कारण सामाजिक बहिष्कार, अपमान और हिंसा का भी सामना करना पड़ा। इस पृष्ठभूमि ने उनकी राजनीतिक चेतना और भागीदारी को लंबे समय तक सीमित रखा। स्वतंत्रता–पूर्व काल में दलित महिलाओं की राजनीतिक भूमिका सीमित थी, किंतु सामाजिक सुधार आंदोलनों ने उनके भीतर चेतना का संचार किया। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले द्वारा शिक्षा पर दिया गया बल तथा डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में चले दलित आंदोलनों ने दलित महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। महाड़ सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों में दलित महिलाओं की भागीदारी ने उनके राजनीतिक विकास की नींव रखी। स्वतंत्र भारत में भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के माध्यम से दलित महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। अनुसूचित जातियों और महिलाओं के लिए आरक्षण व्यवस्था ने उन्हें संसद, विधानसभा और विशेष रूप से पंचायती राज संस्थाओं में प्रतिनिधित्व प्रदान किया। 73वें संविधान संशोधन के बाद बड़ी संख्या में दलित महिलाएँ स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में निर्वाचित हुईं, जिससे उनकी राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। हालाँकि यह प्रतिनिधित्व प्रारंभ में कई स्थानों पर प्रतीकात्मक रहा और वास्तविक सत्ता पुरुषों या प्रभुत्वशाली वर्गों के हाथों में बनी रही, फिर भी शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुभव के साथ दलित महिलाओं ने निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाना शुरू किया। राज्य और राष्ट्रीय राजनीति में भी कुछ दलित महिलाओं ने नेतृत्व कर यह सिद्ध किया कि वे प्रभावी राजनीतिक भूमिका निभा सकती हैं।

**कुँजी–** महाड़ सत्याग्रह, दलित, राजनीतिक, सशक्तिकरण, सामाजिक–संरचना, राजनीतिक विकास, भागीदारी संरचनाओं, सांस्कृतिक।

**प्रस्तावना**

भारतीय समाज एक जटिल सामाजिक संरचना पर आधारित रहा है, जहाँ जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर असमानताएँ ऐतिहासिक रूप से विद्यमान रही हैं। इन असमानताओं के सबसे निचले पायदान पर दलित महिलाएँ रही हैं, जिन्हें एक साथ जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता और आर्थिक शोषण का सामना करना

पड़ा। दलित महिलाएँ न केवल पितृसत्तात्मक व्यवस्था की शिकार रही हैं, बल्कि उन्हें जाति–आधारित उत्पीड़न और बहिष्कार भी झेलना पड़ा है। राजनीतिक विकास किसी भी वर्ग या समुदाय की सामाजिक चेतना, अधिकार–बोध और सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत में दलित महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में क्रमिक परिवर्तन देखने को मिलता है। संविधान, आरक्षण, लोकतांत्रिक संस्थाएँ और सामाजिक आंदोलनों ने दलित महिलाओं को राजनीति में भागीदारी के अवसर प्रदान किए हैं, किंतु यह विकास अनेक बाधाओं और संघर्षों के बीच हुआ है।

**अध्ययन का उद्देश्य**– भारत में दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संवैधानिक प्रावधानों, राजनीतिक भागीदारी, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करना है।

## दलित महिला अवधारणा एवं सामाजिक स्थिति

'दलित' शब्द का प्रयोग उन वर्गों के लिए किया जाता है जिन्हें परंपरागत जाति व्यवस्था में अस्पृश्य माना गया। दलित महिलाएँ दोहरी वंचना की शिकार रही हैं एक ओर वे दलित हैं और दूसरी ओर महिलाएँ। समाजशास्त्री इसे द्विगुणित भेदभाव कहते हैं। परंपरागत भारतीय समाज में दलित महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति, निर्णय–निर्माण और सार्वजनिक जीवन से वंचित रखा गया। वे खेतिहर मजदूर, घरेलू सेविका और असंगठित क्षेत्र की श्रमिक के रूप में कार्य करती रहीं। इस सामाजिक पृष्ठभूमि का सीधा प्रभाव उनकी राजनीतिक चेतना और भागीदारी पर पड़ा।

## स्वतंत्रता–पूर्व काल में दलित महिलाओं की राजनीतिक विकास

स्वतंत्रता–पूर्व भारत में दलित महिलाओं की राजनीतिक भूमिका सीमित थी, किंतु पूर्णतः अनुपस्थित नहीं। सामाजिक सुधार आंदोलनों ने उनकी चेतना को जागृत करने का कार्य किया।

## सामाजिक सुधार आंदोलन

ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने दलित महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका माना जाता है, जिन्होंने दलित और शोषित महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से आत्मसम्मान सिखाया।

## डॉ. भीमराव अंबेडकर और दलित महिलाएँ में राजनीतिक विकास

डॉ. अंबेडकर ने दलित महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। महाड़ सत्याग्रह और मंदिर प्रवेश आंदोलनों में दलित महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। उन्होंने महिलाओं से कहा कि वे शिक्षा ग्रहण करें, आत्मनिर्भर बनें और राजनीतिक चेतना विकसित करें। डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने न केवल दलितों के अधिकारों की बात की, बल्कि दलित महिलाओं की स्थिति को भी गंभीरता से समझा। अंबेडकर ने महिलाओं को शिक्षा, संगठन और संघर्ष के माध्यम से अपने अधिकारों के लिए आगे आने का आह्वान किया। महाड़ सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन और दलित सम्मेलनों में महिलाओं की भागीदारी ने दलित महिलाओं में राजनीतिक आत्मविश्वास को जन्म दिया। अंबेडकर ने संविधान निर्माण के दौरान महिलाओं को समान अधिकार, मतदान का अधिकार और सामाजिक न्याय की गारंटी दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

स्वतंत्र भारत और संवैधानिक प्रावधान–स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास के लिए मजबूत आधार प्रदान किया।

## समानता का अधिकार

अनुच्छेद 14, 15, 17 और 16 सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान करते हैं। जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव को असंवैधानिक घोषित किया गया। अनुच्छेद 46 में दलितों और महिलाओं दोनों को समानता और संरक्षण प्रदान करते हैं। अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था ने दलित महिलाओं को राजनीतिक संस्थाओं में प्रवेश का अवसर दिया। पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण और कई राज्यों में 50ः आरक्षण ने दलित महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया। अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों ने उन्हें स्थानीय शासन में नेतृत्व की भूमिका निभाने का अवसर दिया। अनुसूचित जातियों के लिए संसद, विधानसभा और स्थानीय निकायों में आरक्षण की व्यवस्था की गई। जिससे दलित महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व के नए अवसर मिले।

## दलित महिलाओं की सामाजिक–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में दलित महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति, सत्ता और निर्णय–निर्माण की प्रक्रियाओं से पूर्णतः वंचित रखा गया। उन्हें केवल श्रम और सेवा से जोड़ा गया तथा सामाजिक शोषण और लैंगिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। सामाजिक सुधार आंदोलनों से पूर्व उनकी स्थिति अत्यंत कमजोर थी। उन्नीसवीं शताब्दी में जब सामाजिक सुधार आंदोलनों का उदय हुआ, तब पहली बार दलित महिलाओं की स्थिति पर विचार किया गया। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने दलित महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा को ही राजनीतिक चेतना की पहली सीढ़ी माना जा सकता है, क्योंकि बिना शिक्षा के राजनीतिक अधिकारों की समझ संभव नहीं थी।

दलित महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी– दलित महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मुख्य रूप से तीन स्तरों पर देखी जा सकती है– स्थानीय स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर।

### (1) स्थानीय स्तर

पंचायती राज संस्थाओं में दलित महिलाओं की भागीदारी सबसे अधिक दिखाई देती है। ग्राम पंचायतों में सरपंच, पंचायत सदस्य और जिला परिषद प्रतिनिधि के रूप में दलित महिलाएँ कार्य कर रही हैं। इससे उन्हें निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर मिला है।

### (2) राज्य स्तर

राज्य विधानसभाओं में दलित महिलाओं की संख्या सीमित रही है, फिर भी कुछ राज्यों में दलित महिला नेताओं ने प्रभावशाली भूमिका निभाई है। उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में दलित महिलाओं का राजनीतिक उभार देखने को मिलता है।

### (3) राष्ट्रीय स्तर

राष्ट्रीय राजनीति में दलित महिलाओं की संख्या अभी भी कम है, लेकिन कुछ प्रमुख नेता संसद में पहुँचकर दलित महिला मुद्दों को उठाने में सफल रही हैं। यह संकेत देता है कि राजनीतिक विकास की प्रक्रिया धीरे–धीरे आगे बढ़ रही है।

## प्रमुख दलित महिला राजनीतिक नेता

भारत में कई दलित महिला नेताओं ने राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इनमें मायावती का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री के रूप में दलित राजनीति को नई दिशा दी। इसके अलावा मीरा कुमार, जो लोकसभा की अध्यक्ष रहीं, ने भी दलित महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया। स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर भी अनेक दलित महिला नेता उभरी हैं, जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर कार्य किया है।

## दलित महिला नेतृत्वरू ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरण

### ऐतिहासिक नेतृत्व

स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद के वर्षों में कुछ दलित महिलाओं ने सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया, हालाँकि उनका योगदान मुख्यधारा इतिहास में अपेक्षाकृत कम दर्ज हुआ।

- सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा को सामाजिक और राजनीतिक मुक्ति का साधन माना।
- रमाबाई अंबेडकर ने डॉ. अंबेडकर के सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई और महिलाओं को संगठित किया।

इन महिलाओं का योगदान प्रत्यक्ष चुनावी राजनीति से अधिक सामाजिक चेतना निर्माण में रहा, जो आगे चलकर राजनीतिक विकास का आधार बना।

### समकालीन नेतृत्व

समकालीन भारत में दलित महिलाओं ने राजनीति के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व किया है।

- मायावतीः उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने दलित राजनीति को राष्ट्रीय पहचान दी।
- मीरा कुमारः लोकसभा अध्यक्ष के पद तक पहुँचना दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का ऐतिहासिक

क्षण था।

- स्थानीय स्तर की नेतारू पंचायतों और नगर निकायों में हजारों दलित महिलाएँ नेतृत्व कर रही हैं, जो लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करती हैं।

## दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास में बाधाएँ

दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं–

1. शिक्षा की कमी आज भी बड़ी संख्या में दलित महिलाएँ अशिक्षित हैं, जिससे राजनीतिक समझ सीमित रहती है।
2. सामाजिक भेदभाव जाति और लिंग आधारित भेदभाव उनकी नेतृत्व क्षमता को चुनौती देता है।
3. आर्थिक निर्भरता आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण वे स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय नहीं ले पातीं।
4. पितृसत्तात्मक सोच कई बार निर्वाचित होने के बावजूद वास्तविक सत्ता पुरुषों के हाथ में रहती है।
5. हिंसा और उत्पीड़न राजनीतिक सक्रियता के कारण दलित महिलाओं को सामाजिक हिंसा का सामना करना पड़ता है।

## दलित महिलाएँ और चुनावी राजनीति

### मतदान व्यवहार

दलित महिलाएँ भारतीय लोकतंत्र की एक बड़ी मतदाता शक्ति हैं। वे न केवल मतदान करती हैं, बल्कि सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित कर रही हैं।

### उम्मीदवार के रूप में भागीदारी

चुनावी राजनीति में दलित महिलाओं की भागीदारी अभी भी सीमित है, विशेषकर सामान्य (अनारक्षित) सीटों पर। इसके पीछे कारण हैं–

- धनबल की कमी
- राजनीतिक दलों में आंतरिक भेदभाव
- हिंसा और डर का वातावरण

इसके बावजूद, हाल के वर्षों में दलित महिलाएँ स्वतंत्र उम्मीदवार या वैकल्पिक राजनीति के माध्यम से उभर रही हैं।

## राजनीतिक दल और दलित महिलाएँ

अधिकांश राजनीतिक दल दलित महिलाओं को वोट बैंक के रूप में देखते हैं, न कि नीति–निर्माण की साझेदार के रूप में।

- टिकट वितरण में भेदभाव
- नेतृत्व पदों से दूरी
- प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व, जैसी समस्याएँ आम हैं।

हालाँकि कुछ दलों और संगठनों ने दलित महिला मोर्चा, प्रशिक्षण कार्यक्रम और नेतृत्व विकास पहल शुरू की हैं, जो सकारात्मक संकेत हैं।

## शिक्षा और राजनीतिक चेतना

### शिक्षा का प्रभाव

शिक्षा दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का सबसे प्रभावी माध्यम रही है। शिक्षित दलित महिलाएँ

- अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं
- प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझती हैं
- नेतृत्व में आत्मविश्वास दिखाती हैं

### उच्च शिक्षा और नई पीढ़ी

विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में पढ़ रही दलित महिलाएँ अब केवल अध्ययन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि

वे

- छात्र राजनीति
- सामाजिक आंदोलन
- डिजिटल एक्टिविज्म, में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

**आर्थिक सशक्तिकरण और राजनीति**

आर्थिक स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता की पूर्वशर्त है। स्वयं सहायता समूहों, मनरेगा और सहकारी संस्थाओं ने दलित महिलाओं की आय और आत्मनिर्भरता बढ़ाई है।

आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव

- चुनाव लड़ने की क्षमता
- राजनीतिक दबाव का सामना
- स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति

**दलित महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और राजनीति**

दलित महिलाओं के विरुद्ध हिंसा केवल सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि राजनीतिक मुद्दा भी है।

- यौन हिंसा
- सामाजिक बहिष्कार
- चुनावी हिंसा

इनका उद्देश्य दलित महिलाओं को सत्ता से दूर रखना होता है।

जब दलित महिलाएँ राजनीति में सक्रिय होती हैं, तो हिंसा एक दमनकारी हथियार के रूप में प्रयोग की जाती है।

**कानून, न्याय और दलित महिलाएँ**

कानून दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है।

- SC/ST अत्याचार निवारण अधिनियम
- महिला संरक्षण कानून
- मानवाधिकार आयोग

इन संस्थाओं ने दलित महिलाओं को कानूनी संरक्षण दिया है, हालाँकि कानून के क्रियान्वयन में अभी भी गंभीर कमियाँ हैं।

**मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और नई राजनीति**

मुख्यधारा मीडिया में दलित महिलाओं की आवाज सीमित रही है। इसके विपरीत, डिजिटल मीडिया ने नए अवसर प्रदान किए हैं।

- सोशल मीडिया पर दलित महिला नेतृत्व
- वैकल्पिक मीडिया प्लेटफॉर्म
- ऑनलाइन अभियानों के माध्यम से जागरूकता

डिजिटल स्पेस दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का नया क्षेत्र बनकर उभरा है।

**निष्कर्ष—**

भारत में दलित महिलाओं का राजनीतिक विकास एक लंबी, संघर्षपूर्ण और बहुआयामी प्रक्रिया रही है। यह विकास केवल राजनीतिक संस्थाओं में भागीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान, अधिकार—बोध और नेतृत्व क्षमता के क्रमिक निर्माण से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज की पारंपरिक जाति व्यवस्था और पितृसत्तात्मक संरचना ने दलित महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से हाशिये पर रखा, जिसके परिणामस्वरूप वे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सबसे अधिक वंचित वर्ग बनी रहीं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दलित महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण भारतीय लोकतंत्र की समावेशिता और

गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण मानक है। स्वतंत्रता–पूर्व काल में दलित महिलाओं की राजनीतिक भूमिका सीमित रही, किंतु सामाजिक सुधार आंदोलनों और डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों ने उनकी राजनीतिक चेतना को जागृत करने में निर्णायक भूमिका निभाई। शिक्षा, समानता और अधिकारों पर दिया गया बल दलित महिलाओं को सार्वजनिक जीवन की ओर अग्रसर करने का आधार बना। स्वतंत्र भारत में संविधान द्वारा प्रदत्त समानता, आरक्षण और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों ने दलित महिलाओं को राजनीति में प्रवेश के औपचारिक अवसर प्रदान किए। विशेष रूप से पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण ने बड़ी संख्या में दलित महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया, जो उनके राजनीतिक विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध हुआ।

हालाँकि इस प्रतिनिधित्व की प्रकृति प्रारंभिक चरणों में कई बार प्रतीकात्मक रही, फिर भी समय के साथ दलित महिलाओं ने प्रशासनिक अनुभव, राजनीतिक प्रशिक्षण और सामाजिक समर्थन के माध्यम से वास्तविक नेतृत्व की ओर कदम बढ़ाए। स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में उनकी सक्रिय भूमिका ने यह सिद्ध किया कि यदि अवसर और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ तो दलित महिलाएँ प्रभावी निर्णय–निर्माता बन सकती हैं। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कुछ दलित महिला नेताओं का उभरना इस परिवर्तन का प्रतीक है, यद्यपि उनकी संख्या अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

इस अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ है कि दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास में अनेक संरचनात्मक बाध ााएँ बनी हुई हैं। पितृसत्तात्मक मानसिकता, जातिगत भेदभाव, सामाजिक हिंसा, आर्थिक निर्भरता और अशिक्षा उनकी राजनीतिक सक्रियता को सीमित करती हैं। कई बार स्वयं राजनीतिक दल भी दलित महिलाओं को केवल आरक्षित वर्ग या मतदाता के रूप में देखते हैं, न कि नीति–निर्माण और नेतृत्व के सशक्त माध्यम के रूप में। यह स्थिति दलित महिलाओं के वास्तविक राजनीतिक सशक्तिकरण की राह में एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करती है। दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास को व्यापक नारीवादी विमर्श से जोड़ना भी आवश्यक है। पारंपरिक नारीवाद ने लंबे समय तक जाति के प्रश्न को पर्याप्त महत्व नहीं दिया, जिसके कारण दलित महिलाओं के विशिष्ट अनुभव और संघर्ष हाशिये पर रहे। दलित महिला विमर्श ने इस कमी को उजागर करते हुए यह स्पष्ट किया है कि राजनीतिक सशक्तिकरण तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक जाति, वर्ग और लिंग के संयुक्त प्रभाव को समझकर नीतियाँ नहीं बनाई जातीं। भविष्य की दृष्टि से यह आवश्यक है कि दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास को केवल आरक्षण तक सीमित न रखा जाए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, राजनीतिक प्रशिक्षण और सुरक्षित सामाजिक वातावरण उनके नेतृत्व विकास के लिए अनिवार्य हैं। साथ ही राजनीतिक दलों के आंतरिक ढाँचों में लोकतांत्रिक सुधार और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। डिजिटल मीडिया और सामाजिक आंदोलनों ने हाल के वर्षों में दलित महिलाओं को अपनी आवाज स्वयं उठाने के नए अवसर प्रदान किए हैं, जिन्हें सकारात्मक दिशा में विकसित किया जाना चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भारत में दलित महिलाओं का राजनीतिक विकास केवल एक सामाजिक वर्ग के उत्थान का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की आत्मा और उसकी नैतिक शक्ति से जुड़ा हुआ है। जब दलित महिलाएँ राजनीतिक नेतृत्व में सक्रिय और सशक्त भूमिका निभाएँगी, तभी लोकतंत्र वास्तव में सहभागी, न्यायपूर्ण और समावेशी बन सकेगा। दलित महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण सामाजिक न्याय की स्थापना की दिशा में एक अनिवार्य और अपरिहार्य कदम है।

## Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

## संदर्भ सूची–

1. अंबेडकर, भीमराव रामजी जाति का विनाश अनुवाद वाल्मीकि चौधरी, फारवर्ड प्रेस, 2019.

2. अंबेडकर, भीमराव रामजी नारी और सामाजिक क्रांति महाराष्ट्र सरकार, 1993.
3. चक्रवर्ती, उमा जाति और पितृसत्ता राजकमल प्रकाशन, 2008.
4. गुरु, गोपाल "दलित महिलाएँ अलग तरह से बोलती हैं." इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली (हिंदी चयन), 1996, पृ. 45—52.
5. जोशी, सीमा दलित नारी विमर्श वाणी प्रकाशन, 2012.
6. देसाई, नीरजा भारतीय महिला आंदोलन का इतिहास लोक भारती प्रकाशन, 2005.
7. फुले, ज्योतिबा. गुलामगिरी. अनुवादरू रमाशंकर यादव 'विद्रोही', सम्यक प्रकाशन, 2016.
8. फुले, सावित्रीबाई काव्यफुले महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल, 1995.
9. बाम्बसेफ (संपा.) दलित महिलाओं की स्थिति बाम्बसेफ प्रकाशन, 2001.
10. मेहता, कल्पना भारतीय राजनीति में महिलाएँ राधाकृष्ण प्रकाशन, 2010.
11. ओमवेट, गेल दलित और लोकतांत्रिक क्रांति अनुवाद रामबक्श, सेतु प्रकाशन, 2004.
12. पाइक, शैलजा आधुनिक भारत में दलित महिलाओं की शिक्षा अनुवाद सीमा सिंह, रूटलेज (हिंदी संस्करण), 2018.
13. रेगे, शर्मिला जाति लिखना, लिंग लिखना जुबान हिंदी अनुवाद संस्करण, 2014.
14. वाल्मीकि, ओमप्रकाश दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
15. शर्मा, कुसुम पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण दीप एंड दीप प्रकाशन, 2009.


## Cite this Article-


*'मो0 अफरोज आलम; प्रो० (डॉ०) पवन कुमार', "भारत में दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का एक अध्ययन',* Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800011

Published Date- 10 August 2025